उत्तर वैदिक काल का राजनीतिक जीवन

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

उत्तर वैदिक काल में धीरे-धीरे राजतंत्रात्मक व्यवस्था का विकास हुआ. राजा तथा प्रजा का भेद स्पष्ट होने लगा. राजा की शक्ति तथा हैसियत में काफी इजाफा हुआ. कबीले के अन्य सदस्य की अपेक्षा उसकी प्रतिष्ठा को बढ़ाने का प्रयास किया गया.

उत्तर वैदिक काल का राजनीतिक जीवन में पुरोहितों ने राजाओं में देवत्व का आरोपण किया. राजसूय यज्ञ (राजा के सिंहासनरोहण के समय किया जाने वाला यज्ञ), वाजपेय यज्ञ (रथ दौड़), अश्वमेधयज्ञ आदि के माध्यम से राजा की शक्तियों में वृद्धि की गई. इस काल में अलग-अलग क्षेत्रों के अलग-अलग राजाओं की चर्चा मिलती है.

इस काल में अधिकारी व्यवस्था की नींव पड़ी. संगृहीद्द तथा भागदध नामक कर संग्राहक अधिकारीयों की चर्चा मिलती है. बलि जो पुर्व में भेंट था अब कर बन गया. लेकिन अभी भी राजा के पास सेना का आभाव था, युद्ध के लिए वह कबीले पर निर्भर था. इस काल में सभा तथा समिति महत्व मे आई.

उत्तर वैदिक काल का राजनीतिक जीवन में कई दार्शनिक क्षत्रिय राजाओं की सुचना मिलती है जैसे की विदेह के राजा जनक, कैकेय के अश्वपति, पांचाल के प्रवाहणजवालि, काशी के अजातशत्रु|